ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 109-111
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

जीविका परियोजना – संगठन और कार्यप्रणाली एवं इसके प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

उमेश कुमार

शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार) भारत

Received-28.10.2023, Revised-05.11.2023, Accepted-10.11.2023 E-mail: umeshravidas15031993@gmail.com

सारांश: *बिहार राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले निर्धन महिलाओं को स्वरोजगार के माध्यम से सशक्त करने के उद्देश्य से बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन परियोजना की स्थापना की गयी है। इसका संचालन बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति द्वारा किया जाता है जो सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1860 के अंतर्गत निबंधित है। इसका प्रारंभ 2 अक्टूबर 2007 को किया गया है। परियोजना के प्रथम चरण में राज्य के छह जिलों – मधुबनी, मुजफरपुर, खगड़िया, नालंदा, गया एवं पूर्णिया के कुल 18 प्रखंडों में कार्य प्रारंभ किया गया था और 2 अक्टूबर 2009 से इसका विस्तार उपर्युक्त जिलों के 24 अन्य प्रखंडों के अतिरिक्त मधेपुरा एवं सुपौल जिला के एक–एक प्रखंड में किया गया। 1 जुलाई 2010 से सुपौल एवं मधेपुरा के उपर्युक्त दो प्रखंडों को कोसी लड रिकवरी प्रोजेक्ट के तहत जीविका परियोजना में शामिल किया गया। इनके अलावा परियोजना में सुपौल, मधेपुरा एवं सहरसा जिले के 11 अतिरिक्त प्रखंडों में भी दिसम्बर 2010 से कार्य प्रारंभ किया गया है। 13 प्रखण्डों में कोसी लड रिकवरी प्रोजेक्ट के चौथे अवयव के अंतर्गत जीविकोपार्जन की पुनप्राप्ति तथा संवर्द्धन हेतु परियोजना में अपनायी गयी सामुदायिक संस्था के मॉडल के अनुसार कार्य किया जा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के स्थान पर राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का क्रियान्वयन करने का निर्णय लिये जाने के उपरांत बिहार सरकार द्वारा राज्य के सभी प्रखंडों में चरणबद्ध तरीके से इस मिशन के क्रियान्वयन हेतु जीविका परियोजना को राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के रूप में नामित किया गया जिसके फलस्वरूप वर्ष 2012–13 में प्रथम चरण वाले छह जिलों के शेष बचे 60 प्रखण्डों, 12 अन्य जिलों के तीन–तीन प्रखंड तथा शेष 17 जिलों में एक प्रखण्ड में इस कार्यक्रम को लागू किया गया। आगे के वर्षों में राज्य के शेष बचें 366 प्रखंडों में इसका क्रियान्वयन क्रमिक रूप से किया गया।*

कुंजीभूत शब्द– निर्धन, जीविका, जीविकोपार्जन, मॉडल, परियोजना, क्रमिक, सामुदायिक संस्था, स्वरोजगार, ग्रामीण आजीविका।

जीविका परियोजना विश्व बैंक की सहायता से 2 अक्टुबर 2007 को प्रारंभ किया गया और बिहार में सबसे पहले छह जिला में कार्य करना प्रारंभ किया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य निर्धनता को दुर करना है। ग्रामीण गरीबों की सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। यह परियोजना स्व–प्रबंधित सामुदायिक संस्थाओं का निर्माण करता है तथा उनके लिए दीर्घकालीन जीविकोपार्जन के साधनों को विकास करता है एवं उनकी खाद्यान्न की उपलब्धता को सुनिश्चित कर सामाजिक सुरक्षा के अवयवों को प्रभावी बनाने का कार्य करता है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु परियोजना की विशिष्ट कार्यविधि निर्धारित है। इसकी कुछ प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं :–

i. ग्रामीण महिलाओं के सशक्त संगठन का निर्माण कर आजीविका संबंधी गतिविधियों का संपादन तथा बहुउद्देशीय उत्पादक समूहों को निर्माण करना।

ii. ग्रामीण महिलाओं के संगठनों को आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु बचत, आंतरिक लेन–देन तथा निरंतर अदायगी सुनिश्चित कर आवश्यकतानुसार बाहरी वित्तीय संस्थाओं के साथ उन्हें जोड़ना।

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में गरीब तबके के लोगो का हालत ऐसी है कि वह सही से अपने परिवार की परवरिश नही कर रहे हैं। जीविका परियोजना संगठन बनाकर कार्य करना प्रारंभ किया तथा ग्रामिण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया है। यह परियोजना बिहार के सभी महिलाओं के लिए खुला है और यह विभिन्न जिलो में ग्रामीण स्तर पर संगठन बनाकर विभिन्न नामों से जीविका समूह बनाया गया है। यह समूह दीपमाला, किरण, ज्योति, गंगा आदि नामों से बनाया गया है। इसमें स्वंय सहायता समूह का क्रियाकलाप महिलाएँ ही करती हैं। कोई बुक किपर का काम करती हैं, तो कोई कोई साप्ताहिक बैठक का लेखा–जोखा का काम करती हैं। इस संगठन समूह में 12–15 सदस्य होते हैं, जिसमे मुख्य रूप से तीन सदस्य अध्यक्ष, कोशाध्यक्ष तथा सचिव होते हैं। ये तीनों सदस्य में से बैक से लोन लेने के लिए दो सदस्य का हस्ताक्षर उपस्थित होना अनिवार्य है। जीविका परियोजना के ढ़ाँचें में परंपरागत विकास मॉडल के अनुभवों के साथ रचनात्मक तरीकों का भी समावेश किया गया है, जो परियोजना को विशिष्ट पहचान दिलाते हैं। जीविका परियोजना की प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं :

i. जीविका परियोजना केवल ग्राम स्तरीय संगठनों के निर्माण का ही नहीं, बल्कि आजीविका आधारित उत्पादक समूहों तथा ग्राम संगठनों के संघों का निर्माण कर उन्हें मजबूती प्रदान करने के महत्वपूर्ण ध्येय के साथ आगे बढ़ रही है।

ii. संस्थागत विकास और क्षमता निर्माण में अधिक निवेश हेतु जीविका अपने सदस्यों की क्षमता बढ़ाने और उनके संस्थागत विकास पर बल देती है।

iii. जीविका परियोजना के अंतर्गत ग्राम स्तरीय संगठनों एवं उनके संघों की मदद के लिए, अपने कार्यक्षेत्र के सभी गाँवों में "पारा प्रोफेशनल" ढ़ाँचे को बढ़ावा दिया जा रहा है जो आगे चलकर ग्राम स्तरीय संगठनों एवं उनके संघों को स्व–प्रबंधित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

iv. जीविका परियोजना "सब्सिडी" मॉडल के बदले स्वविकास विचारधारा को प्रमुखता देती है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

v. जीविका परियोजना "सेचुरेशन मॉडल" पर कार्य करती है। तदनुसार प्रखंड के गाँवों तथा उन गाँवों के लक्षित परिवारों को परियोजना के साथ जोड़ा जाता है।

vi. ग्राम संगठनों तथा उनके संघों के आर्थिक विकास हेतु कुल परियोजना लागत की आधी से भी ज्यादा राशि सामुदायिक निवेश निधि के रूप में है। इसका व्यापक उपयोग इन सामुदायिक संगठनों को बाहरी वित्तीय संस्थानों की दृष्टि में योग्य ग्राहक संस्थान के रूप में विकसित करता है।

vii. विशेष तकनीकी सहायता और विकास निधि के अंतर्गत उन तकनीकी सहयोगी एजेंसियों के साथ साझेदारी की जा रही है, जिन्हें आजीविका सुधार, वित्तीय सेवाएँ और गरीबों के नवीन और दृढ़ संगठन विकसित करने के अनुभव हों।

viii. आजीविका के पारंपरिक एवं गैर–पारंपरिक क्षेत्रों में विशिष्ट पहल की जा रही है। कृषि में श्री विधि जैसी नई तनकनीकी के प्रयोग से उपज में बढ़ोतरी हुई है साथ ही सेवा क्षेत्र में साझेदारी कर रोजगार के अवसर सृजित कराए जा रहे हैं।

परियोजना की संस्थागत व्यवस्था– बिहार सरकार के वित्त विभाग के अंतर्गत बनायी गयी इस संस्था की कार्यकारिणी समिति, विकास आयुक्त की अध्यक्षता में गठित है। इसमें बिहार सरकार के कई अन्य विभागों के प्रधान यथा प्रधान सचिव – वित्त विभाग, प्रधान सचिव – ग्रामीण विकास विभाग, प्रधान सचिव – समाज कल्याण विभाग, महानिदेशक – विपार्ड, प्रबंध निदेशक – महिला विकास निगम, निदेशक – आई०सी०डी०एस०, प्रबंध निदेशक – कॉम्फेड, सीजीएम – नाबार्ड, कार्यकारी निदेशक – प्रदान एवं राष्ट्र स्तर की गैर सरकारी संस्थाओं की प्रतिनिधि के रूप में सिस्टर सुधा वर्गिज सदस्य हैं। संस्था के मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी के रूप में भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक वरिष्ठ पदाधिकारी नियुक्त हैं। परियोजना की रूप रेखा के अंतर्गत छह जिला में 100 प्रखण्ड स्तरीय संघ बनाये जाते हैं। एक प्रखंड स्तरीय संघ में लगभग 20–30 ग्राम संगठन तथा एक ग्राम संगठन में 8–16 स्वंय सहायता समूह का निर्माण किया जाता है। इस स्वंय सहायता समूह में 10–15 महिला सदस्यों की संख्या होती है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि जीविका परियोजना संगठन समूह से जुड़कर महिलाएँ किस प्रकार कार्य कर रही है। साथ ही जीविका के द्वारा गठित संगठन समूह की महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा है।

अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से 50 अत्तरदाताओं का चयन किया गया है। तथ्यों के संकलन के साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा साक्षात्कार प्रविधि का उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्शन– प्रस्तुत शोध पत्र अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर मुजफरपुर जिला के बोचहाँ प्रखंण्ड अर्न्तगत पटियासा पंचायत के अर्न्तगत किया जा रहा है जहाँ से 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है तथा यह देखने का प्रयास किया जा रहा है कि जीविका परियोजना ने किस प्रकार महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है और सशक्त किया है। इस पंचायत में जीविका परियोजना के माध्यम से कई संगठन समूह गठित किये है और प्रत्येक समूह में 10–15 महिलाओं को जोड़ा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया जा रहा है कि अध्ययन क्षेत्र में जीविका परियोजना के माध्यम से जीविका समूहों की महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा है।

तथ्य विश्लेषन– अध्ययन क्षेत्र से चयंनित किये गये उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषन इस प्रकार किया गया है :–

तालिका संख्या : 1

क्या आपको लगता है कि जीविका परयोजना ने ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को परिवर्तित करने का कार्य किया है ? हाँ/ नही

उत्तरदाता		हाँ		नही	
कुल संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
50	100	42	84	08	16

उपर्युक्त तालिका से यह स्पश्ट होता है कि पुछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि जीविका परयोजना ने ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को परिवर्तित करने का कार्य किया है, तो कुल उत्तरदाताओं के 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जवाब इस प्रश्न के सहमति से दिया है, जबकि कुल उत्तरदाताओं के 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जवाब दिया है।

तालिका संख्या : 2

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को ऋणग्रस्तता से मुक्ति दिलाया है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नही	
कुल संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
50	100	36	72	14	28

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पुछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना ने ग्रामीण महिलाओं को ऋणग्रस्तता से मुक्ति दिलाया है, तो कुल उत्तरदाताओं के 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि 28 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जवाब दिया है।

तालिका संख्या : 03

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना का प्रभाव बालिका शिक्षा पर भी पड़ा है ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नही	
कुल संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
50	100	45	90	05	10

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता हैं कि पुछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता हैं कि जीविका परियोजना का प्रभाव बालिका शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ा है, तो कुल उत्तरदाताओ के 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जवाब सहमति में दिया है, जबकि कुल उत्तरदाताओं के 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जवाब दिया है :

तालिका संख्या : 04

क्या आपको ऐसा लगता है की जीविका परयोजना से ग्रामिण महिलाएँ अंधविश्वास के प्रति जागरूक हुई हैं ? हाँ/नही

उत्तरदाता		हाँ		नही	
कुल संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
50	100	40	80	10	20

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पुछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता हैं कि जीविका परियोजना से ग्रामीण महिलाएँ अंधविश्वास प्रति जागरूक हुई हैं, तो कुल उत्तरदाताओं के 80 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जवाब सहमति में दिया, जबकि कुल उत्तरदाताओं के 20 प्रतिशत उत्तरदाताओ ने इस प्रश्न असहमति में अपना जवाब दिया है :

तालिका संख्या : 05

क्या आपको ऐसा लगता है कि जीविका परियोजना से जुड़कर महिलाएँ स्वरोजगार कर रही हैं ? हाँ/नहीं

उत्तरदाता		हाँ		नही	
कुल संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	नही	प्रतिशत
50	100	38	76	12	24

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको ऐसा लगता हैं कि जीविका परियोजना संगठन समूह से जुड़कर महिलाएँ स्वरोजगार कर रही हैं, तो कुल उत्तरदाताओ के 76 प्रतिशत अत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है, जबकि कुल उत्तरदाताओं के 24 प्रतिषत उत्तरदाताओ ने इस प्रश्न का जवाब असहमति में दिया।

निष्कर्ष– इस प्रकार उपरोक्त विवरणों के आधार पर स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले निर्धन महिलाओं को निर्धनता से मुक्ति दिलाने में जीविका परयोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। परियोजना से जुड़कर निर्धन महिला स्वरोजगार के माध्यम सें आत्मनिर्भर बनकर सशक्त हो रही हैं। ये महिलायें जीविका परियोजना से जुड़कर ऋण ले रही है, स्वंय सहायता समूह की सदस्य बनकर स्वरोजगार करने के लिए जागरूक भी हुई हैं और इस परियोजना से जुड़कर ग्रामीण महिला लाभान्वित भी हो रही हैं। इतना ही नहीं स्वरोजगार के लिए समुचित प्रशिक्षण तथा कौशल विकाश के अन्तर्गत धन मुहैया भी कराया जा रहा है। स्वरोजगार करने से इन्हें स्थानीय महाजन के चंगुल से महिलाओं को मुक्ति मिल रही है। स्वाबलंबन एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में यह प्रयास सराहनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति के वेबसाईट से संकलित तथ्य।
2. मल्होत्रा, राकेश; विभिन्न योजनाओं में स्वंय सहायता समूह – एक व्यवहारिक मार्गदर्शिका, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007.
3. शर्मा, सुभाष; भारतीय महिलाओं की दशा, आधार प्रकाशन, पंचकुला हरियाणा, 2012.
4. कुरूक्षेत्र, मासिक पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. योजना, मासिक पत्रिका, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

*****